''मुझे थोड़ी धूप दो, मुझे थोड़ी बारिश दो''

अनुपमा सिंह
सीनियर फेकल्टी एंड कौच, आरयूडीएसईटी इंस्टीट्यूट

यह वास्तव में आज कृषि उद्योग में महिला शक्ति से संबंधित है और उसे दर्शाता है। यदि हम आज से प्राचीन काल तक उलटे क्रम में यात्रा करें, तो क्या कोई महिला शक्ति के बिना दुनिया की कल्पना कर सकता है? पुनरावलोकन सिद्ध करता है कि जब भी उसे मौका मिलता है वह सदैव अपने पदचिन्ह अंकित करती रहती है।

महिलाएं युगों से कृषि जगत का एक अभिन्न अंग रही हैं और 'आरपीएल (रिकॉग्निशन ऑफ प्रायर लर्निंग) के अन्तर्गत कृषि और संबद्ध गतिविधियों का उत्तरदायित्व निभाती रही हैं। उन लोगों के बारे में क्या कहना है जो तर्क देते हैं कि कृषि क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी सदैव सामाजिक और आर्थिक बाधाओं द्वारा सीमित रही है और इन बाधाओं को दूर करने के लिए प्रौद्योगिकी की कहीं अधिक की आवश्यकता होगी?

संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) की एक रिपोर्ट से पता लगता है कि भारत में सभी स्व–रोजगार किसानों में महिलाओं की भागीदारी 48 प्रतिशत है। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय (एनएसएसओ) की रिपोर्ट भी बताती है कि 46 प्रति ात महिला कार्यबल कृषि क्षेत्र से जुड़ा हुआ है, किन्तु मात्र 13 प्रतिशत महिलायें ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने में योगदान देने वाली उद्यमिता में लगी हुई हैं। लिंग के आधार पर प्रौद्योगिकी को अपनाने में भी बड़ा अंतर है। इसके अतिरिक्त से असमानता आज भी चली जा रही है, और यह देखा गया है कि ग्रामीण

महिला कार्यबल की न तो निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में भागीदारी है और न ही उन्हें कृषि क्षेत्र में जटिल मशीनीकृत कार्य करते देखा जाता है।

कृषि क्षेत्र के परिवर्तन में प्रौद्योगिकी की महत्वपूर्ण भूमिका है, जिससे महिलाओं को तकनीकी हस्तक्षेपों द्वारा सशक्त होने वाली बाधाओं को दूर करने के लिए नए कौशल सेट और दक्षता प्राप्त करने में सहायता मिलती है। इससे चुनौतियों से निपटने और कार्यबल में उनकी भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए लिंग–समावेशी संरचना को सुविधाजनक बनाने में सहायता मिली है। कृषि क्षेत्र में ऐसे रोल मॉडल हैं जो न केवल सामुदायिक स्तर पर बल्कि प्रौद्योगिकी–आधारित कृषि–उद्योग में भी ''परिवर्तन एजेंट'' के रूप में उभरे हैं। ऐसा ही एक नाम है मल्लिका श्रीनिवासन, जिन्हें 'ट्रैक्टर क्वीन' के नाम से जाना जाता है। उन्होंने ट्रैक्टरों के बड़े पैमाने पर निर्माण के लिए टैफे (ट्रैक्टर एंड फार्म इक्विपमेंट लिमिटेड) की स्थापना की। एक अमेरिकी वैश्विक बिजनेस पत्रिका के अनुसार, वह भारत की शक्तिशाली महिलाओं में से एक हैं।

महिला उद्यमी कृषि पद्धतियों में क्रांति ला रही हैं और तकनीक–आधारित कृषि क्षेत्र के विकास में अपने योगदान के लिए नाम कमाने में सक्षम हैं। कृषक समुदाय और कृषि क्षेत्र पर प्रभाव पैदा करने वाले कुछ लोगों के नाम इस प्रकार हैं:

फार्मिजन की सह–संस्थापक गीतांजलि राजमणि ने कई शहरी निवासियों के लिए शहर में अपने खेत खरीदने के सपने को वास्तविकता में बदल दिया है, जिससे आप सहजता से ताजा और स्वस्थ उपज उगा सकते हैं।

भारत एग्री की सह–संस्थापक साई गोले ने किसानों को वास्तविक समय की जानकारी और डेटा प्रदान करने में मोबाइल ऐप्स की शक्ति को पहचाना, जो किसानों को अधिक कुशलता से बढ़ने के लिए सशक्त बनाते हैं।

इंटेलो लैब्स की संस्थापक हिमानी शाह आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) का उपयोग करके कृषि के लिए एक इंटेल हब बनाने की दिशा में काम करती हैं। शाह और उनकी टीम किसानों का विश्वास अर्जित करने और प्रौद्योगिकी के साथ कृषि उद्योग को आगे बढ़ाने के लिए समर्पित है।

गुरदेव कौर देओल ने ग्लोबल सेल्फ–हेल्प

https://doi.org/10.52151/aet2024481.1724

ग्रुप की स्थापना की, जो 400 से अधिक किसानों के समुदाय को पशुधन पालन, मधुमक्खी पालन और ताजा उपज की पैकेजिंग जैसी गतिविधियों में सम्मिलित करता है, जो एक सहयोगात्मक और टिकाऊ दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है।

सारदाम्बा अन्नसमुद्रम और सेलावारानी इलांगोवन जैसे नवप्रवर्तक कॉर्टेवा एग्रीसाइंस में महत्वपूर्ण योगदान दे रहीं हैं। बाद में कृषि में समकालीन चुनौतियों का समाधान करने के लिए जीन संपादन, नैनोटेक और आणविक मार्कर जैसी अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों का लाभ उठाने के महत्व पर जोर दिया जा रहा है। उनका अग्रणी कार्य तकनीकी नवाचार के माध्यम से कृषि उद्योग को आगे बढ़ाने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

झारखंड के डाल्टन गंज से बेंगलुरु स्थित स्टार्टअप ''द मिल्क इंडिया कंपनी'' के साथ डेयरी उद्योग में प्रवेश करने तक की यात्रा, शिल्पी सिन्हा के लिए आसान नहीं थी, जो बच्चों के स्वास्थ्य पर ध्यान केंद्रित करते हुए काँच की बोतलों में बिना पाश्चुरीकृत, कच्चा और शुद्ध गाय का दूध देने के लिए समर्पित हैं।

जामा ऑर्गेनिक्स के साथ, पहली पीढ़ी की उद्यमी, श्रिया नाहेटा ने पूरे भारत में पचास हजार से अधिक किसानों को जोड़कर जैविक कृषि समुदाय को एक समाधान प्रदान किया है। यह कृषि–तकनीक घरेलू उत्पादों और जैविक उत्पादों की पेशकश करने वाले दोनों मॉडलों यानी बी2बी और बी2सी पर काम करती है। उनकी यात्रा पुरुष–प्रधान कृषि–उद्योग में अपना स्थान बनाने का प्रयास कर रही हैं।

अनीशा गोयल और श्रुति जैन की दिल्ली स्थित केज लिविंग, कृषि–तकनीक, द्वारा एक पारदर्शी फार्म–टू–फोर्क मॉडल बनाने वाले हाइड्रोपोनिक्स में उद्यम करती हैं। वे हाइड्रोपोनिक्स किसानों को तकनीकी विशेषज्ञता, खेती के इनपुट और उपज बेचने के लिए एक मंच प्रदान करती हैं।

भारत सरकार की पहल-

महिलाओं के लिए प्रौद्योगिकी अपनाने को

प्रोत्साहित करने और उनकी भागीदारी बढ़ाने के लिए विभिन्न योजनाएं और कार्यक्रम शुरू किए गए हैं:

सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग, भोपाल ने कम श्रम वाली तकनीकें जैसे उर्वरक ब्रॉडकास्टर, व्हील बैरो, धान विनोवर आदि छोटी मशीनें विकसित की हैं और महिलाएं अब इन मशीनों का उपयोग करने में काफी परिचित हैं। फिर भी उन्हें सशक्त बनाने के लिए कौशल एवं क्षमता निर्माण प्रशिक्षण के माध्यम से अभी भी एक लंबा रास्ता तय करना है।

कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय ने महिला किसान दिवस मनाया और ''नवाचार और कृषि–उद्यमिता विकास कार्यक्रम'' योजना आरम्भ की है। यह योजना राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (आरकेवीवाई–आरएएफटीएएआर) के तहत है, जिसका लक्ष्य वित्तीय सहायता प्रदान करने और ऊष्मायन पारिस्थितिकी तंत्र का पोषण करने के लिए नवाचार के साथ तकनीकी–आधारित उद्यमों को बढ़ावा देना है।

कृषि आधारित स्टार्टअप को समर्थन देने में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) की भूमिका काफी उल्लेखनीय है। नेशनल एग्रीकल्चर इनोवेशन फंड (एनएआईएफ) योजना 2016–2017 में आरम्भ की गई थी और इसने महिलाओं के नेतृत्व वाले स्टार्टअप उद्यमों को लाभ पहुँचाने के लिए लगभग पचास कृषि–व्यवसाय इन्क्यूबेशन सेंटर (एबीआईसी) को वित्त पोषित किया है। ये सभी केंद्र सलाह और मार्गदर्शन के लिए आईसीएआर नेटवर्क के भीतर कार्यरत हैं। आईसीएआर लगभग 173 महिला स्टार्टअप उद्यमियों का समर्थन कर रहा है।

हाल ही में, महिला किसानों को तकनीकी रूप से समझदार बनाने और तकनीक–आधारित कृषि गतिविधियों में उनके लिए अवसर खोलने के लिए पायलट प्रशिक्षण के रूप में यूको बैंक आरएसईटीआई, बेगुसराय, बिहार द्वारा एसएचजी महिलाओं को ''सिंचाई के लिए ड्रोन प्रौद्योगिकी का उपयोग'' में प्रशिक्षित किया गया है। .

निष्कर्ष

टेकसाइंस रिसर्च की एक रिपोर्ट से पता चलता है कि 2018 में भारतीय कृषि बाजार का मूल्य 85 मिलियन डॉलर से अधिक था और इसके 10 प्रतिशत से अधिक सीएजीआर से बढ़ने की उम्मीद है। महिलाओं के लिए एआई सीखकर और उद्योग की माँग को पूरा करने के लिए विचार निर्माण, प्रयोग और नई तकनीक और आपूर्ति श्रृंखला तंत्र को लागू करने के साथ कृषि क्षेत्र में मानक स्थापित करके अधिक योगदान देने के अपार अवसर हैं।